आरती – दुर्गाजी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।
तेरे भक्तजनों पर माता भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ–सौ सिंहों से बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली।
दुष्टों को तू ही ललकारती।। ओ मैया हम सब उतारें.....
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पुत कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता।
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली।
दुःखियों के दुःखड़े निवारती।। ओ मैया हम सब उतारें.....
नहीं मांगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना।
हम तो मांगें माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती।। ओ मैया हम सब उतारें.....
चरण–शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरदहस्त सर पर रख दो, माँ संकट हरने वाली।
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली।
भक्तों के कारज तू ही सारती।। ओ मैया हम सब उतारें.....